।। तुही निंरकार ।।

{ तर्ज - यहाँ में अजनबी हुँ .. (जनम ये देनेवाली) }

है सत्गुरु माताजी का, आज हमसे ये कहना
बडे ही प्यार से है, हमे मिलकर के रहना ।।धृ ।।

कसम खाई है हमने, रहेंगे प्यार से हम
करे स्वागत सभी का, बडे सत्कार से हम
खिले इक कमल जैसे, रौशन मीनार से हम
बनाये पुल दिलो में, ना हो दीवार से हम
अमन हो, चैन हो और, सभी से भाईचारा
बने संसार सारा, इक परिवार प्यारा ।।1।।

मिशन शहनशाह जी वाला, हमे वापस है लाना
पुरातन भक्तो जैसा, ये जीवन है बनाना
करे हम सबर सदा ही, करे हरपल शुकराना
रजा स्वीकार हो और, लगे मीठा ये भाणा
देखे छोटा बडा ना, सबको ही गले लगाये
जो भी रुठे है हमसे, उन्हे जाकर मनाये ।।2।।

गुरु हरदेव जी का, सपना साकार है करना
मन की मत त्यागकर अब, गुरु की मत है धरना
मिलके अनिकेत हमने, अब तो आगे है बढ़ना

पुज्य माताजी के ही, आदेशो पे है चलना

सेवा सत्संग करे हम, सिमरन को बढाये

अपने कर्मो से ही, मिशन को हम फैलाये ।।3।।